कविवर मुकुटबिहारी सरोज की एक कविता

इन्हें प्रणाम करो ये बड़े महान हैं

उद्घाटन में दिन काटें रातें अखबारों में,
ये शुमार हो कर ही मानेंगे अवतारों में।
दन्तकथाओं के उद्गम का पानी रखते हैं,
पूंजीवादी-तन में मन भूदानी रखते हैं।
होगा एक तुम्हारे इनके लाख-लाख चेहरे,
इनको क्या नामुमकिन है, ये जादूगर ठहरे !
तुम होगे सामान्य यहां तो पैदाइशी प्रधान हैं ।
इन्हें प्रणाम करो ये बड़े महान हैं।
ये जो कहें प्रमाण करें जो कुछ प्रतिमान बने,
इनने जब-जब चाहा तब-तब नये विधान बने।
कोई क्या सीमा नापे इनके अधिकारों की,
ये खुद जन्मपत्रियां लिखते हैं सरकारों की ।
ये तो बड़ी कृपा है जो ये दिखते भर इन्सान हैं ।
इन्हें प्रणाम करो ये बड़े महान हैं।

2008 में किसान के गेहूँ की कीमत 1300 रुपये
2016 में 1500 रुपये
2008 में कपास 3500 रुपये 2016 में 4500 रुपये
विधायक का वेतन
2008 में 60000 रुपये
2016 में 125000 रुपये
2008 में मक्का 1000 रुपये
2016 में 1200 रुपये
ज्वार 2008 मे 1200 रुपये
2016 में 1400 रुपये
दूसरी ओर कीटनाशकों के दाम डबल
डी ए पी 2008 में 450 रुपये
2016 में 1250 रुपये
पोटाश 2008 में 400 रुपये से 900 रूपये
सुपर 2008 में 150 रुपये से 2016 में 300 रुपये
ओर सरकार कहती है किसानों की आय डबल करेंगे
आय डबल केवल सरकारी कर्मचारियों की
नेताओं की ओर व्यापरियों की करो,
किसानों की तो ऐसे ही डबल हो जायेगी...
और मजे की बात...
सरकार किसानों के लिए कृषि मेला,
कृषि रथ किसान कल्याण जैसी योजनायें
चलाती है जिसमें करोड़ो रुपये बर्बाद करती है..
कुछ महीनों पहले कृषि महोत्सव का
आयोजन हुआ था जिसमे सरकार ने
450 करोड़ रुपये खर्च किये थे
एक भी किसान बता दे कि
उसने इस योजना से 450 रुपये का भी
फायदा लिया हो...
सरकार की सारी योजनाओं का लाभ
केवल कृषि से जुड़े कर्मचारी ओर व्यापारी ले रहे हैं
सरकार की योजनाओं का लाभ
सिर्फ 20 प्रतिशत किसान ले पाते हैं...

– अनिल बेलरखा

पीड़ितों पर दबाव बनाते एक एसीपी

बल्लभगढ़ (चन्द्र प्रकाश)। गांव जवां में 15 अप्रैल रात्रि 8 बजे दो दलित परिवारों में झगड़ा हो गया था। प्रीतम, महेंद्र, जोगिंद्र, विनोद, सोहनलाल, आनंद, सुशील, सुरेंद्र, मनोज ने लाठी व सरिया लेकर घर में घुस कर धावा बोल दिया। जिसमें बिजेंद्र, उसका बेटा मंजीत, पत्नी सरोज भाभी पांची और बेटी अनुराधा को पीट-पीट कर लहु-लुहान कर दिया। उसके बाद वे बुद्धन की छत पर चढ़ गए और वहां से ईंटें और कांच की बोतलें फेंकनी शुरू कर दी। इस पथराव में बिजेंद्र की बेटी अनुराधा के सर में चोटें लगी और व मौके पर ही बेहोश हो गई। लड़ाई शांत होने के पश्चात गांव वाले बिजेंद्र, मनजीत, अनुराधा, पांची और सरोज को सिविल अस्पताल बल्लभगढ़ लेकर गए। वहां डॉ. ने अनुराधा की हालत नाजुक देखते हुए ट्रॉमा सैंटर एम्स दिल्ली रैफर कर दिया। अनुराधा अखबार प्रकाशित होने तक भी बेहोश है और जिंदगी-मौत से जूझ रही है। बिजेंद्र, पत्नी सरोज और भाभी पांची को प्राथमिक चिकित्सा के बाद घर भेज दिया गया। अगले दिन 16 अप्रैल को बिजेंद्र ने थाना छांयसा में दरख्वास्त देकर सारी घटना को बतलाया। अगले दिन थाना एसएचओ ने दोषियों के खिलाफ-148, 149, 323 और 452 धारा लगा कर मुकदमा दर्ज कर लिया। आईओ समय सिंह 19 अप्रैल को अनुराधा के बारे में जानकारी लेने के लिए ट्रॉमा सैंटर दिल्ली पहुंचा। डॉ. ने उसे बतलाया कि अनुराधा की हालत नाजुक है उसके सर में गहरी चोंटें हैं और वह अभी बेहोश है। इस बारे में जानकारी पुख्ता करने के लिए एस.एच.ओ. ने सिविल अस्पताल के एम.एल.आर. काटने वाले डॉ. मान सिंह से फोन पर पूछताछ की जिसने उन्हें बताया कि अनुराधा के सर की चोटों से उसकी जान को खतरा है। उसके पश्चात एस.एच.ओ. ने धारा 307 लगाकर दोषियों को पकडने की प्रक्रिया शुरू कर दी, यह बात अलग है कि दिनांक 30 अप्रैल तक एक भी दोषी नहीं पकड़ा गया है। पीड़ित पक्ष को प्रीतपाल पर पूरा भरोसा है वे निश्चय ही उन्हें न्याय दिलाएंगे।

लेकिन इसी बीच एसीपी विष्णु दयाल इस केस में अपनी टांग अड़ाने लगता है। 22 अप्रैल को विष्णु दयाल ने समय सिंह के द्वारा पीड़ित परिवार को बुलवाया। पीड़ित करीब 20 लोगों को लेकर विष्णु दयाल के कार्यालय पर पहुंचा। एसीपी ने कहा-बताओ कैसे आना हुआ। मौजूद लोगों में से भानु प्रकाश मलिक ने कहा-आपने बुलाया है जनाब, इस पर विष्णु दयाल ने बेवजह हमदर्दी दिखाई और कहा-मै एस.एच.ओ को बोल देता हूं सालों को पकड कर हवालात में डाले, आदि, आदि... मौजूद लोगों से बयान दर्ज कराए और पीड़ित पक्ष को भेज दिया। शाम को विष्णु दयाल ने प्रीतपाल के पास फोन किया उस समय गांव के दो लोग प्रीतपाल के पास मौजूद थे कहा-ये बिजेंद्र बड़ा झूठा है इसको साले को पकड़ कर जूते लगाओ। एसएचओ प्रीतपाल की उचित कार्यवाही में एसीपी विष्णु दयाल दखल अंदाजी कर दोषी पक्ष को लाभ पहुंचाना चाहते हैं। एसीपी के रीडर यशपाल के द्वारा बिजेन्द्र को फिर से बुलवाया गया और 22 अप्रैल की भांति फिर से ब्यान दर्ज कराने का ड्रामा दोहराया गया। जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। दोषियों को लाभ पहुंचाने के लिए एसीपी साहब किसी भी हद तक जा सकते हैं। इतना ही नहीं क्रोस केस बनाकर दोषी पक्ष को राहत देने की उनकी मंशा साफ नजर आती है। इस बात की पुष्टि **एक तथाकथित दलित नेता अनिल बाबा के दावे से होती है कि एसीपी विष्णु दयाल मेरा खास आदमी है। उससे मैंने बड़े-बड़े काम करवाये हैं एक-दो दोषियों को निकलवाना कौन सी बड़ी बात है।**

आगे की क्या सोची

ठीक इसी तरह सीबीएसई ने तीन घंटे की पाबंदी इसलिए लगाई थी ताकि सिस्टम में धोखाधड़ी को पकड़ा जा सके। लेकिन आपको क्या! आपको को अपना पर्दा बचाना है, सिस्टम बर्बाद हो, इब्लीसियत और बद-उन्वानी का शिकार हो, आपकी बला से !!

मुसलमानों को एक बड़ी कामयाबी हासिल हुई है। AIPMT वाले मसले में। लड़कियों को डाक्टरी के (दाखिला) इम्तेहान में बैठने के लिए हिजाब/नकाब/ पर्दा की इजाजत मिल गयी है शायद।

खुश तो बहुत होंगे आप। लेकिन आगे की क्या सोची ?

मेडिकल कॉलेज में लड़कियों को पुरुष के जननांग में फोली कैथेटर (पेशाब की नली) डालना सिखाया जाता है ताकि इमरजेंसी के वक्त यदि पुरुष डॉक्टर अनुपस्थित हो तो यह काम महिला डॉक्टर कर दे।

इसी तरह के रूटीन उपचार लड़को को भी सिखाये जाते हैं। यह उम्दा डॉक्टरी तालीम का हिस्सा है।

पिछले दिनों एक मेडिकल कॉलेज की सर्जरी ओपीडी में जाना हुआ। वहां देखा कि MBBS के बच्चों की टीचिंग चल रही थी। प्रोफेसर बच्चों को बवासीर और स्तन कैंसर के बारे में पढ़ा रहे थे। पढने वालों में लड़के व लड़कियां दोनों थे जिन्हें उनके टीचर दो मरीजों के जरिये उपचार का तरीका सिखा रहे थे। मरीजों के अंग विशेष खुले थे। एक मरीज़ पुरुष था एक महिला।

अब ऐसा नही है कि मैं आपके हिजाब के खिलाफ हूँ। आप हिजाब लगायें, आपके लिए बेहतर है। लेकिन 3 घंटे की प्रवेश परीक्षा में एक स्कार्फ न पहनने से क्या बिगड़ जाता आपका? गैर-महरम को देखना गलत है, फिर उसके जननांग देखना तो और भी गलत। लेकिन आपको देखना पड़ता है क्यूंकि आपका गैर है, आपको मरीज की जान बचानी होती है।

ठीक इसी तरह सीबीएसई ने तीन घंटे की पाबंदी इसलिए लगाई थी ताकि सिस्टम में धोखाधड़ी को पकड़ा जा सके। लेकिन आपको क्या! आपको अपना पर्दा बचाना है, सिस्टम बर्बाद हो, इब्लीसियत और बद-उन्वानी का शिकार हो, आपकी बला से!!

अब जिन्होंने नकाब/ हटने पर हंगामा किया था, क्या उनके पास इतना कलेजा है कि वो यह सब कर पायें।

अलीगढ़ की एक लड़की ने तो पिछले साल बड़े फख्र से प्रवेश परीक्षा ही छोड़ दी थी! ऊपर से अपनी इस तीस मारखानी की दास्ताँ अखबार में भी छपवाई थी!

इस्लाम में तस्वीर हराम है। अब उन मोहतरमा से कोई पूछे कि कल फोटो की वजह से पासपोर्ट न बनने की हालत में क्या आप हज का सफ़र भी ठुकरा देंगी? ताज्जुब है, हम क्या खा-पी कर बड़े हो रहे हैं। क्या सोच रहे हैं ?

– डॉक्टर मोहम्मद नावेद

माल्या का पासपोर्ट रद्द, अब तो 'जरूर पकड़ा जायेगा'

पेज एक का शेष

गत दो वर्षों से 'मज़दूर मोर्चा' लगातार माल्या की करतूतों पर लिखता आ रहा है। कई बार प्रमाण सहित इस अखबार ने माग की कि माल्या को भी सुब्रत राय की तरह ही तब तक तिहाड़ जेल में रखा जाय जब तक कि वह बैंकों से लूटा जनता का पैसा वापस न कर दे। साथ ही उन बैंकरों व राजनेताओं को भी जवाबदेह माना बनाया जाय जिनकी मिलीभगत से माल्या को बैंक एक के बाद एक कर्जे देते रहे हैं।

ध्यान रहे कि माल्या को कांग्रेस शासन में (सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम-प्रणव मुखर्जी) कर्जे दिये गये थे। उसे देश छोड़ कर भागने की सुविधा भाजपा शासन में (नरेन्द्र मोदी-अरूण जेटली द्वारा) दी गयी। ऐसे में क्या उसका बाल बांका हो पायेगा? मोदी जेटली का ट्रैक रिकॉर्ड इस बात की गवाही नहीं देता कि वे माल्या को कानून के सामने लाने के लिये गंभीर हैं। ललित मोदी का मामला अभी पुराना नहीं हुआ जिसे मुख्यमंत्री राजस्थान वसुंधरा राजे सिंधिया व विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज की मिलीभगत से लंदन में शरण मिली हुई है।

न यह खेल नया है और न खिलाड़ी बदले हैं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब